तर्ज--अब तो है तुमसे हर खुशी अपनी

मौज है ये धनी आपकी अपनी
आप रखते हो मेहर मे अपनी

1--अपने धनी जी तो है, मेहरों के सागर
मेहर है उनकी , अव्वल आखर
निमख न काढ़ी, नजर से अपनी

2--इश्क और इलम, हक की मेहर से आया
है मोमिनों पर, मेहर की छाया
अर्श दिल मे भरी, रोशनी अपनी

3--सनकूल नजरे ,मेहर भरी है
आपके बल से , रूह ये खड़ी है
आपकी ये ही, साहेबी अपनी

Nijanand App